













# संपादकीय

## मिशन अग्निपथ पर आंदोलनजीवियों का कहर

सरकार की गलत नीतियों का शांतिपूर्ण विरोध करना विपक्ष का अधिकार है। मगर विगत आठ वर्ष में सरकार का नकारात्मक विरोध ही होता रहा है। इससे अंततः विपक्ष की ही प्रतिष्ठा धूमिल होती है। ऐसा लगता है कि विपक्षी पार्टीयों की अपनी कोई नीति ही नहीं है। उसके नेता आंदोलनजीवियों का ही मनोबल बढ़ाते हैं। फिर उनकी लगाई आग में सियासी रोटी सेंकने का प्रयास करते हैं। अग्निपथ योजना के विरोध में भी ऐसा ही आंदोलन शुरू हुआ है। इसका विरोध वही लोग कर रहे हैं, जिनमें आत्मानुशासन और आमविश्वास का अभाव है। चार वर्ष की सेवा के बाद भी रोजगार के अवसर समाप्त नहीं होंगे। अधर्थी अर्थक रूप से भी स्वावलंबी होंगे। सेना में चार वर्ष की सेवा जीवनशैली को बदल देगी। समाज और देश को देखने का नजरिया ही बदल जाएगा। इसके बाद वह जहां भी कार्य करेगे, वह औरों से अलग दिखाई देगा। तब वह किसी आंदोलनजीवियों के इशारे पर राष्ट्रीय संपत्ति को आग के हवाले नहीं करेगे। फिलहाल वर्तमान सरकार के प्रत्येक कदम पर उपद्रव और हंगामा करने वाले एक बारा फिर सक्रिय हैं। विगत आठ वर्षों के दौरान विकास के अनगिनत कीर्तिमान स्थापित हुए। सैकड़ों लोक कल्याणकारी योजनाओं से जन सामान्य को लाभान्वित किया गया। रक्षा सहित अनेक क्षेत्रों में आत्मनिर्भर भारत अभियान संचालित है। इसके उल्लेखनीय प्रमाण मिल रहे हैं। दशकों से लॉबिट लाखों करोड़ रुपये की परियोजनाओं को इस अवधि में पूरा किया गया। वन रैक वन पेंशन की मांग चार दशकों से लॉबिट थी। वर्तमान सरकार ने इसे लागू किया। यूपीए सरकार के समय से सैन्य कमांडर राफेल लडाकू विमान सहित अनेक अस्त्र शस्त्रों को भारतीय सेना के लिए अपरिहार्य बता रहे थे। क्योंकि चीन अपनी सामरिक शक्ति लगातार बढ़ा रहा था। इस ओर भी वर्तमान सरकार ने ध्यान दिया तर्कित रक्षा सौदों का क्रियान्वयन हुआ। इसके साथ ही स्वदेशी रक्षा उत्पाद का नया अध्याय शुरू हुआ। आज भारत पचहत्तर देशों को रक्षा सामग्री का निर्यात कर रहा है। सीमा क्षेत्र में अभृतपूर्व निर्माण कार्य किए गए। कोई भी सरकार देश के सभी युवाओं को सरकारी नौकरियां नहीं दे सकती। इसको ध्यान में रखते हुए स्वरोजगार की अनेक योजनाएं लागू की गई। अग्निवीरों में से पच्चीस प्रतिशत को सेना की सुव्यवस्थित सेवा में समायोजित करने की बात महत्वपूर्ण है। शेष युवाओं को अर्धसैनिक बल, असम राइफल्स आदि में प्राथमिकता के आधार पर समायोजित किया जाएगा स्वरोजगार के लिए सरकार उनको प्राथमिकता के आधार पर छठन उपलब्ध कराएगी। आंदोलनजीवियों को बताना चाहिए कि 17 से 21 अयु वर्ग के युवाओं को नीं नौकरी कर सकते हैं। अग्निपथ योजना के तहत भारतीय युवाओं को अग्निवीर के रूप में चार साल के लिए सशस्त्र सेवाओं में शामिल होने का मौका दिया जाएगा। सेनाओं की ट्रेनिंग देने के बाद इन्हें पाकिस्तान-चीन सीमा पर तैनात किया जाएगा। सशस्त्र सेनाओं से निकलने के बाद इन 'अग्निवीरों' को केंद्र सरकार के मंत्रालयों और राज्य सरकारों की नौकरियों में प्राथमिकता दी जायेगी। रक्षा मंत्रालय की यह स्कीम युवाओं को देशसेवा का मौका देने के साथ ही उन्हें तकनीकी तौर पर भी सुधारने में मदद करेगी। इस योजना से विभिन्न क्षेत्रों में नए कौशल के साथ रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। 'अग्निपथ' योजना के तहत सशस्त्र बलों का युवा प्रोफेशनल तैयार करने का प्रयास किया जा रहा है। अन्य देशों के मॉडल का अध्ययन किया गया।

## पाक में सातवें आसमान पर महंगाई

संजाध ठाकुर  
गर के अपदस्थ

के प्रधानमंत्री बनते ही 24 दिनों में पेट्रोल डीजल की कीमत ?84 बढ़कर आंकी गई है। अब पाकिस्तान में पेट्रोल की कीमत ?233 और डीजल 263 तथा केरोसिन मैं 29 की वृद्धि कर उसकी कीमत 211 हो गई है। पाकिस्तान के वित्त मंत्री इस्माइल ने 15 जून की रात्रि में बड़ी हुई कीमतों की घोषणा कर दी है, जनता त्राहि-त्राहि कर रही है। इसके अलावा पाकिस्तान की योजना मंत्री एहसान इकबाल ने आवाम को कम चाय पीने की सलाह भी दे दी है जिससे पाकिस्तानी मीडिया और आम जनता नए शहबाज शरीफ मर्मिंडल के पूरी तरह खिलाफ हो गई है। उल्लेखनीय है कि पाकिस्तान में चाय की खपत बहुत ज्यादा है एवं पाकिस्तान में चाय को आयात करना पड़ता है पाकिस्तान हर साल \$50 करोड़ डॉलर की चाय आयात करता है। यदि चाय काम आएगी तो आयात पर बोझ कम होने की गुंजाइश बनती है। पाकिस्तान की सरकार का कहना है कि पेट्रोल डीजल पर 120 अरब रुपए की की सब्सिडी दी जा रही है और इसका सरकार घाटा उठा रही है। पेट्रोल डीजल की कीमतें बढ़ने से जो राजस्व सरकार को प्राप्त होगा वह इंटरनेशनल मैनिटरी फंड से लिए गए कर्ज की अदायगी के काम आने वाला है। इसी तरह बिजली के बिलों में प्रति यूनिट 13 की वृद्धि की गई जिससे आम जनता की कमर ही टूट गई है। पाकिस्तान में पिछले 24 माह से सबसे ज्यादा महंगाई 13% आंकी गई है पर वास्तव में यह महंगाई 44% हो गई है मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक हाल ही में तेल की बढ़ी कीमतों की वजह से महंगाई जबरदस्त तरीके से विस्फोट कर रही है। पाकिस्तान में बढ़ती महंगाई के लिए शहबाज शरीफ और उनकी कैबिनेट के तमाम मंत्री जिमेदार हैं। पाकिस्तान में महंगाई एक बार फिर सातवें आसमान पर पहुंच गई है, और इसके कारण वहाँ की जनता को अपने रोजमरा के खर्चों को पूरा करने में काफी परेशानी हो रही है। पाकिस्तानी ब्यूरो ऑफ स्टैटिस्टिक्स के ताजा आंकड़ों के अनुसार महंगाई दर 13फीसद से बढ़कर 44% हो गई है जो पिछले 24 माह में सर्वाधिक ऊँचाई पर है। पाकिस्तान के प्रमुख अखबार द डॉन की खबर के अनुसार आंकड़ों से पता चलता है कि देश में महंगाई की दर कंज्युमर प्राइस इंडेक्स के हिसाब से महंगाई की दर पिछले 25 सालों में सबसे ज्यादा आंकी गई है।

# अग्निपथ की आग में झूलसा भारत "अर्थी दो या भर्ती दो"

अशोक कुमार निर्भय

अग्निपथ की आग में झुलसा भारत "अर्थी दो या भर्ती दो" के नारे ने पीएम मोदी का विजयपथ रोक दिया। केंद्र की मोदी नीति सरकार की महत्वपूर्ण योजना अग्निपथ के खिलाफ बिहार से शुरू हुआ विरोध-प्रदर्शन अब तक दिल्ली समेत हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और केरल जैसे सात राज्यों में पहुंच गया है। बिहार के अलावा यूपी, हरियाणा, उत्तराखण्ड और राजस्थान से भी सेना में भर्ती की वर्षों से तैयारी कर रहे युवाओं के उग्र प्रदर्शन की खबरें सामने आ रही हैं। मोटे तौर पर सेना में केवल चार सालों की भर्ती योजना को लेकर छात्रों में खासा आक्रोश है। ये अग्निपथ योजना के विरोध में प्रदर्शन कई शहरों में फैल गया और रेलवे ने 22 ट्रेनें कैसिल कर दी हैं और यात्रियों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। बिहार में बीजेपी नेताओं और उनके ऑफिस को भी निशाना बनाया जा रहा है। बिहार समेत अन्य राज्यों में भाजपा के नेता मुँह छुपाए थूम रहे हैं। दिल्ली के आईटीओ में युवाओं ने अग्निपथ योजना के खिलाफ युवाओं ने जमकर प्रदर्शन किया। इस दौरान करीब 25 प्रदर्शनकारियों को हिरासत में लिया गया है। पीएम मोदी के संसदीय क्षेत्र में युवा सड़कों पर उत्तर कर इस योजना ने विरोध में जमकर प्रदर्शन कर रहे हैं। अग्निपथ योजना के विरोध में वाराणसी में शहरी क्षेत्र से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों तक प्रदर्शन लगातार हो रहा है। कल कैंट स्टेशन के बाहर युवकों ने सवारी वाहनों के शीशे तेढ़े और प्रदर्शन शुरू किया। कैंट स्टेशन परिसर में व्यवेश से रोकने पर भड़के युवाओं ने प्रदर्शन किया। रोडवेज के पास भी युवकों ने पथरबाजी की। पथरबाज कर कई बसों के शीशे तोड़ दिय। कैंट स्टेशन के आसपास की दुकानें बंद हो गई हैं। इंग्लिशिया लाइन पर पथरबाज भी किया गया है। पुलिस प्रशासन ने अतिरिक्त पुलिस बल किसी भी स्थिति से निवाटने के लिए तैनात कर दिया है। अग्निपथ योजना के विरोध में हरियाणा में भी युवाओं का विरोध प्रदर्शन जारी है। नारनाल में सड़कों पर हो रहे प्रदर्शन को नियंत्रित करने के लिए पुलिस को लाठीचार्ज करना पड़ा। इस दौरान दो बात्र नेता समेत 9 प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया। वहाँ, हरियाणा के ही जो अग्निपथ योजना के बाहर युवकों ने सवारी वाहनों के शीशे तेढ़े और प्रदर्शन शुरू किया। वहाँ से यह बल हरियाणा में हिंसक प्रदर्शन को देखते हुए हाई अलर्ट मोड में है। उधर, मध्य प्रदेश के ग्वालियर में बिल्ला नगर रेलवे स्टेशन पर जमकर हांगामा हुआ। युवाओं ने स्टेशन पर तोड़ फोड़ की उसके बाद रेलवे ट्रैक पर कुर्सियां फैंक दी, टायरों में आग लगा दी और रेल परिवाहन बाधित कर दिया। इसके अलावा राजस्थान के सीकर और जयपुर से भी छात्रों के विरोध प्रदर्शन की हो रहे हैं। गौरतलब है कि केंद्र सरकार ने सेना भर्ती के लिए नई नीति अग्निपथ का ऐलान किया है। इसकी जानकारी रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने तीनों सेना के प्रमुखों के साथ एक प्रेस कांफ्रेंस में दी राजनाथ सिंह ने बताया की थल सेना बायु सेना और जल सेना ने फैसला किया है कि अब नौन कमीशन रैक की भर्तियां अग्निपथ योजना के तहत की जाती हैं। यह नौन की जाती ही जाती थी और खुली भर्ती की मुश्किल यह थी कि खरीदार अ को ब और ब को अ सुनते थे। हर साल मेले में गजब भीड़ लगने लगी। लोग अक्सर एक-दूसरे से बात करते तो कहते ज्ञानी बोलते थे कि यहाँ क्या है? अरे तो जरा मुँहट्यूब पर बेचवापुर मेला सच्च करके

# पिता संस्कारदाता ही नहीं, जीवन-निर्माता भी है



ललित गग  
ते दीने

जून महान के तासर राववार का अंतर्राष्ट्रीय पिता दिवस यानी फादर्स डे मनाया जाता है। इस साल 19 जून 2022 को भारत समेत विश्वभर में यह दिवस मनाया जायेगा। पिता दिवस की शुरूआत बीसवीं सदी के प्रारंभ में पिताधर्म तथा पुरुषों द्वारा परवरिश का सम्पान करने के लिये मातृ-दिवस के पूरक उत्सव के रूप में हुई। यह हमारे पूर्वजों की स्मृति और उनके सम्पान में भी मनाया जाता है। दुनिया के अलग-अलग देशों में अलग-अलग दिन और विविध परंपराओं के कारण उत्साह एवं उमंग से यह दिवस मनाया जाता है। हिन्दू परंपरा के मुताबिक पितृ दिवस भाद्रपद महीने की सर्वपितृ अमावस्या के दिन होता है। पिता एक ऐसा शब्द जिसके बिना किसी के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। एक ऐसा पवित्र रिश्ता जिसकी तुलना किसी और रिश्ते से नहीं हो सकती। बचपन में जब कोई बच्चा चलना सीखता है तो सबसे पहले अपने पिता की उंगली थामता है। नन्हा-सा बच्चा पिता की उंगली थामे और उसकी बाँहों में रहकर बहुत सुकून पाता है। बोलने के साथ ही बच्चे जिद करना शुरू कर देते हैं और पिता उनकी सभी जिदों को पूरा करते हैं। बचपन में चॉकलेट, खिलौने दिलाने से लेकर युवावर्ग तक बाइक, कार, लैपटॉप और उच्च शिक्षा के लिए विदेश भेजने तक संतान की सभी माँगों को वो पूरा करते रहते हैं लेकिन एक समय ऐसा आता है जब भागदौड़ भरी इस जिंदगी में बच्चों के पास अपने पिता के लिए समय नहीं मिल पाता है। इसी को ध्यान में रखकर पितृ दिवस मनाने की परंपरा का आरम्भ हुआ।

सोनेरा डोड जब नन्ही-सी थी, तभी उनकी मां का देहांत हो गया। पिता विलियम स्मार्ट ने सोनेरो के जीवन में माँ की कमी नहीं महसूस होने दी और उसे मां का भी प्यार दिया। एक दिन यूं ही सोनेरा के दिल में खाल आया कि आखिर एक दिन पिता के नाम क्यों नहीं हो सकता? इस तरह 19 जून 1910 को पहली बार फादर्स डे मनाया गया। कई महीने पहले 6 दिसम्बर 1907 को मोनोगाह, पश्चिम वर्जीनिया में एक खाना दुर्घटना में मारे गए 210 पिताओं के सम्मान में इस विशेष दिवस का आयोजन

श्रीमती ग्रेस गोल्डन क्लेटन ने किया था। प्रथम फार्दर्स डे चर्च आज भी सेन्ट्रल यूनाइटेड मेथोडिस्ट चर्च के नाम से फैयरमोट में मौजूद है। मानवीय रिश्तों में दुनिया में सबसे बड़ा स्थान माँ को दिया जाता है, लेकिन एक बच्चे को बड़ा और सभ्य बनाने में उसके पिता का योगदान कम करके नहीं आंका जा सकता। बच्चे को जब कोई खरोंच लग जाती है तो जितना दर्द एक माँ महसूस करती है, वही दर्द एक पिता भी महसूस करते हैं। पिता बेटा की चोट देख कर कठोर इसलिये बना रहता है ताकि वह जीवन की समस्याओं से लड़ने का पाठ सीखे, सख्त एवं निःड बनकर जिंदगी की तकलीफों का सामना करने में सक्षम हो। माँ ममता का सागर है पर पिता उसका किनारा है। माँ से ही बनता घर है पर पिता घर का सहारा है। माँ से स्वर्ग है माँ से बैकुंठ, माँ से ही चारों धार्म है पर इन सब का द्वार तो पिता ही है। उन्हीं पिता के सम्पान में पृथु दिवस मनाया जाता है। आधुनिक समाज में पिता-पुत्र के संबंधों की संस्कृति को जीवंत बनाने की अपेक्षा है। कुछ दशक पूर्व के पिताओं ने अपनी भूमिका में एक क्रांति लाई। इसके साथ ही एकल परिवार, शाहरीकरण, रोजगार, आधुनिकता, बदलाता साहित्य, सिनेमा ने भी उस पिता के आचरण में एक बदलाव लाया। वर्तमान समय के पिता का रूप काफी

बदल गया है। पिता बनना आज सिर्फ एक जैविक क्रिया न होकर एक सामाजिक क्रिया भी हो चुकी है। एकल मां की तरह अब समाज में एकल पिता का भी विचार आ चुका है। अब एकल पिता अपने बच्चों का न केवल ख्याल रखते हैं बल्कि उन्हें मां की कमी महसूस नहीं होने देते हैं। गे पिता भी अब समाज में अपनी जगह बनाने लगे हैं। ये पिता भले जैविक पिता नहीं हो सकते लेकिन भावनाओं की अभिव्यक्ति में ये जैविक पिताओं से थोड़े भी उन्नीस नहीं हैं। आधुनिक पिताओं की भूमिका में काफी बदलाव आया है, अब वे अपने बच्चों को दूध पिलाने से लेकर उसके डायर, नैपी तक बदल रहे हैं वो भी पूरी खुशी, प्रतिष्ठा और सम्मान के साथ। कुछ तो समाज की नई बयार ने भी मदद की है जिसमें पति पत्नी दोनों कामकाजी हैं। आज बच्चे अपने पिताओं से भी बहुत दोस्ताना संबंध बनाने लगे हैं क्योंकि ये आधुनिक पिता बहुत लोकतान्त्रिक एवं संवेदनात्मक व्यवहार वाले हैं। यह बच्चों पर दबाव नहीं बनाते। बच्चों का भविष्य अच्छा वही सोच सकते हैं, इस बात पर बच्चों का शोषण नहीं करते। यदि बेटियों ने भी खुद की मर्जी से विवाह, शिक्षा या व्यवसाय चुनने की बात की तो गंभीरता से विचार करते हैं न कि उनका ऑनर कीलिंग कर देते हैं। सबसे ध्यान देने की बात कि आज के कई पिता एकल

समुच्चय है, जो बेटे के दुख में रोता तो सुख में हँसता है। उसे आसमान छूता देख अपने को कहावर मानता है तो राह भटकते देख अपनी किस्मत की बुरी लकीरों को कोसता है। पिता गंगोत्री की वह बृंद है जो गंगा सागर तक एक-एक तट, एक-एक घाट को पवित्र करने के लिए धोता रहता है। पिता वह आग है जो घड़े को पकाता है, लेकिन जलाता नहीं जरा भी। वह ऐसी चिंगारी है जो जरूरत के बक्त बेटे को शोले में तब्दील करता है। वह ऐसा सूरज है, जो सुबह पक्षियों के कलरव के साथ धरती पर हलचल शुरू करता है, दोपहर में तपता है और शाम को धीरे से चांद को लिए रास्ता छोड़ देता है। पिता वह पूनम का चांद है जो बच्चे के बचपने में रहता है, तो धीरे-धीरे घटता हुआ क्रमशः अमावस का हो जाता है। पिता समंदर के जैसा भी है, जिसकी सतह पर असंख्य लहरें खेलती हैं, तो जिसकी गहराई में खामोशी ही खामोशी है। वह चखने में भले खारा लगे, लेकिन जब बारिश बन खेतों में आता है तो मीठे से मीठा हो जाता है। पिता ! का स्नेह और अपनापन के तेज और स्पर्श को शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता है, उसे सिर्फ महसूस किया जा सकता है। वह विलक्षण, साहस और संस्कारदाता होता है। जो समस्त परिवार को आर्द्ध संस्कार ही नहीं देता, बल्कि जीवन निर्वाह के साधन उपलब्ध कराता है। उनके दिए गए संस्कार ही संतान की मूल थाती होती है। इसीलिये पिता के चरणों में भी स्वर्ग एवं सर्व कहा गया है। क्योंकि वे हर क्षण परिवार एवं संतान के लिए छाया की भाँति एक बड़ा सहारा बनते हैं और उनका रक्षा कब्द बच परिवारजनों के जीवन को अनेक संकटों से बचाता है। आज हमें ऐसे पिताओं की जरूरत नहीं जो वर्चस्व स्थापित करके पत्नी एवं बच्चों पर अधिपत्य जमाते हैं बल्कि ऐसे पिताओं की आवश्यकता है जो उनके विचारों और इच्छाओं को न केवल प्रमुखता देते हैं बल्कि उनके सपनों को उड़ान भरने की ताकत भी देते हैं। जीवन में जब भी निर्माण की आवाज उठेगी, पौरूष की मशाल जगेगी, सत्य की आंख खुलेगी तब हम, हमारा वो सब कुछ जिससे हम जुड़े होंगे, वो सब पिता का कीमती तौहफा होगा, इस अहसास को जीवंत करके ही हमें पिता-दिवस को मनाने की सार्थकता पा सकेंगे।

# इंटरनेट युग में पुस्तकों को पढ़ना न भूलें...!

सुनाल फुमार महला  
यग डिजीटल यग है, इंटर

हर कहीं इंटरेट का मकड़गाल फैला हुआ है। इस इंटरनेट के मकड़गाल ने आज युवाओं को पुस्तकों से दूर कर दिया है। युवा वर्ग आज इंटरनेट में इस कदर खोया हुआ है कि उसके पास पुस्तकें पढ़ने के लिए समय ही नहीं है। हमें पुस्तकें पढ़नी चाहिए क्योंकि पुस्तकें ज्ञान का भण्डार है। पुस्तकें हमें जीवन जीना सिखाती हैं और दृष्टि वृत्तियों से हमारी सुरक्षा करती हैं इनमें लेखकों के जीवन भर के अनुभव भरे रहते हैं, और अनुभव हमें जीवन जीना सिखाते हैं। अच्छी पुस्तकें पास होने पर किसी को भी मित्रों की कमी नहीं खटकती है, क्योंकि पुस्तकें व्यक्ति की सबसे अच्छी मित्र होती है। किसी भी पुस्तक का अध्ययन मनन और चिंतन कर उनसे तत्काल लाभ प्राप्त किया जा सकता है, लेकिन यह बिंबाना ही है कि आज युवा पीढ़ी का पुस्तकें पढ़ने से मोहर भंग होता चला जा रहा है। लेकिन युवा पीढ़ी को यह नहीं भूलना चाहिए कि आम आदमी के विकास के लिए जरूरी शिक्षा और साक्षरता का एकमात्र साधन किताबें ही हैं। आज संचार क्रांति ने पुस्तकों से उसके पाठक छीन लिये हैं, ऐसे में हमारे कंधों पर बड़ी चुनौती है। हमें युवा पीढ़ी को पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित व प्रोत्साहित करना होगा, क्यों कि कोई भी पुस्तक ज्ञान का अकूत भंडार ही नहीं हमारी सच्ची मित्र भी होती है। पुस्तकों में वह सबकुछ है, जिसकी मानव को जरूरत होती है। पुस्तक के बौरे ज्ञान की कल्पना नहीं की जा सकती है। ये

हाता। लाफन हन वह बांधा रखना पाहै व  
पुस्तकों के आ जाने के बाद ज्ञान के आदान-प्रदान  
में क्रांति आई है, जो की मानव विकास के लिये  
बहुत ही निर्णायक साबित हुई है। हमें पुस्तकों की  
ओर पुनः लौटाना होगा। हमने समय के साथ साथ  
पुस्तकों के व्यावहारिक, शिक्षाप्रद, मनोरंजक और  
बहुमुखी ज्ञान से अपनी दूरी बना ली है। हमारे  
पास पुस्तकें पढ़ने का समय ही नहीं है। पहले  
लोग लाइब्रेरी में जाते थे, घटों घटों अध्ययन करते  
थे, पुस्तकें इश्यू करावते थे लेकिन अब समय के  
साथ न तो वाचनालय रहे हैं और न ही पुस्तक प्रेमी  
और न ही पढ़ते की भाँति पुस्तकालय, लेकिन  
पुस्तकालय ही वास्तव में हमारे ज्ञानार्जन का एक  
प्रमुख स्रोत है। एक प्रकार से पुस्तकालय हमारे  
राष्ट्र की अनुपम धरोहर है। हमें इंटरनेट के युग  
में यह कदाप नहीं भूलना चाहिए कि पुस्तकों में  
वह शक्ति हैं जो मनुष्य को अंधकार से प्रकाश की  
ओर ले जाती है, जीवन की राहों के काटों को दूर  
करती हैं तथा कठिन से कठिन समस्याओं के हल  
के लिए बल प्रदान करती है, हमें साहस से परिपूर्ण  
करती हैं, हमारे आत्मबल को बढ़ाती हैं, हमें संबल  
प्रदान करती हैं। जिस व्यक्ति को पुस्तकों से लगाव  
है वह स्वयं को कभी कमज़ोर अनुभव नहीं कर  
सकता है। हम कह सकते हैं कि पुस्तकें मनुष्य के  
आत्मबल का सर्वश्रेष्ठ साधन है। मनुष्य के  
ज्ञानानन्द एवं बुद्धि के विकास के लिए पुस्तकों का  
अध्ययन अत्यत आवश्यक है। बताता चलूँ कि  
हमारी सृष्टि की उत्पत्ति का आधार ग्रंथ ही रहे हैं।  
कहते हैं कि शब्द गुरु होते हैं और शब्द पुस्तकों

मौनी बाबा से मनमौजी बाबा

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा  
हमारे एक मित्र ने सलाह दी कि जाइए और  
बेचवापुर का मेला धूम आइए। बेचवापुर मेले का  
इतिहास सन् 2014 से आरंभ होता है। उसी बाय-  
मई महीने की गर्मी के साथ शुरू हुए मेले का महत्वपूर्ण  
दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है। वैसे इस मेले का  
शुरूआत सत्तर साल पहले हुआ था। किंतु मान  
जाता है कि विकास नाम के बालक के खो जाने  
से इस मेले का संग परिका पड़ता चला गया।  
इसीलिए वास्तविक रूप से मई 2014 में विकास  
को खोजने की डोर किसी अन्य गाँव में छोटा सा  
मेला चलाने वाले को दे दिया। बेचवापुर के  
प्रभावित करने में इस मेले का बहुत बड़ा योगदान  
है। कहा जाता है कि इस इलाके में कभी मौनै  
बाबा रहा करते थे। उनका मौन किसी की बतकहीं  
वाले इशारे से चला करता था। इशारों के खेल में  
मुश्किल यह थी कि खरीदार अ को ब और ब  
को अ सुनते थे। हर साल मेले में गजब भीड़ लगती  
लगी। लोग अक्सर एक-दूसरे से बात करते ते  
कहते ज्ञान कहां बेचवापुर धूमने आये हैं?..? अभी

धोती बिक गयी है। बहुत से लोग जाते हैं वहाँ लेकिन हम हूँसौह जगह नहीं जाते जहाँ ठन-ठन गोपालों को मारकर भगा दिया जाता हो। उस बाजार में किसानों, गरीबों, भुखमरों के जाने पर सख्त मनाही है। माना जाता है कि ऐसे लोगों के जाने से बेचवापुर को ग्रहण लग जाता है। विदेशियों को पता चलेगा तो क्या सोचें? अब इस मेले में हवाई जहाज, ताजमहल, लाल किला, गाय, मिट्टी-लकड़ी-लोहे के खिलौने सब कुछ बिकते हैं। इतना ही नहीं विभिन्न प्रकार के पक्षियों सहित कई दूसरी प्रजातियों के कॉपी-पेस्ट टाईप पशु-पक्षियों का बाजार भी सजता है। बेचवापुर के व्यस्त चौराहे पर चाय की दुकान लगाने वाला मेले की तारीफ करते नहीं थक रहा था। यह सोच सिर्फ उस व्यक्ति की नहीं थी।

# खेल संदेश

## एच एस प्रणय इंडोनेशिया ओपन के सेमीफाइनल में

जकार्ता। भारतीय खिलाड़ी एच एस प्रणय ने अपनी शानदार पार्फॉर्में जारी रखते हुए दुनिया के 13वें नंबर के खिलाड़ी रास्सम गेम्स को सीधे गेम में पराजित कर इंडोनेशिया ओपन सुपर 1000



बैडमिंटन टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में प्रवेश किया। डेनमार्क के खिलाफ निर्णायक पार्चवें मुकाबले में गेम्स पर ऐतिहासिक जीत से भारत को थोमस कप फाइनल में पहुंचाने के एक महीने बाद प्रणय ने एक बार फिर गेम्स के खिलाफ 40 मिनट तक चले क्लार्टफाइनल में शानदार प्रदर्शन कर 21-14 21-12 से जीत दर्ज की।

दुनिया के 23वें नंबर के खिलाड़ी प्रणय का यह इंडोनेशिया ओपन में दूसरा सेमीफाइनल है। वह 2017 के चरण में भी अंतम चार में पहुंचे थे। मार्च में रिव्स ऑपन सुपर 300 फाइनल में पहुंचे प्रणय का सामना अब चीन के जाओ जुन पेंग से होगा। इस मैच से पहले प्रणय और गेम्स के बीच जीत का क्रिकार्ड 2-2 से बराबरी पर था।

## Coco Gauff बर्लिन ओपन के सेमीफाइनल में

बर्लिन। अमरीका की कोको गॉ पहली बार ग्रासकोर्ट टैनिस सेमीफाइनल में पहुंच गई जिन्होंने बर्लिन ओपन में क्वोरेसोना प्लिसकोवा को 7.5, 6.4 से हराया। अब उनका सामना ऑस्ट्र



जबात से होगा। फेंच ओपन उपविजेता 18 वर्ष की गाँ ने दोनों सेट में पिछड़े के बारे पापसी करते हुए पिछले साल की विक्सलडन उपविजेता को हराया। वहीं, चौथी वरीयता प्राप्त जबात ने एपिक्यूट्रो सेस्टीन्यूच को 6.2, 6.2 से मात दी। अन्य मैचों में छठी रैकिंग वाली मारिया स्कारी ने फेंच ओपन सेमीफाइनल खेलने वाली डारिया कासालिका को 6.0, 6.3 से हराया। स्कारी का सामना अब बेलांडा बैचिच से होगा जिन्होंने वेरोनिका कुद्रेमेंतोवा को 3.6, 6.3, 6.3 से हराया।

**रिद्धिमा दिलावरी ने Hero WPGT के 8वें चरण में सत्र की पहली जीत दर्ज की**

बैंगलुरु। भारतीय गोल्फर रिद्धिमा दिलावरी ने तीसरे दौर में दो बड़ी की शानदार शुरुआत से 72 का कार्ड खेलकर लगाए।



प्रो गोल्फ टूर के 8वें चरण का खिताब अपने नाम किया। रिद्धिमा का कुल स्कोर एक अंडर 215 रहा और इस तरह उन्होंने जाह्नवी बख्शी (72), सहर, अटवाल (72) और प्रणवी उर्स (76) चार शॉट दर्ज की। इससे रिद्धिमा के लंबे समय से चले आ रहे खिताब का सूखा भी खत्म हुआ। उन्होंने पिछला

से चले आ रहे खिताब का सूखा भी खत्म हुआ। उन्होंने पिछला

खिताब 2021 में जनवरी और फिर दिसंबर में जीता था।

आऊट हुए पंत

पंत के लिए यह सीरीज अच्छी नहीं नहीं है। सीरीज के चौथे मैच में भी वह वाइट गेंट का पीछे करते हुए गलत शट लगा बैठे और अपना विकेट गंवा बैठे। लय छूने में लगे पंत ने मैच में 23 गेंदों



में दो चौकों की मदद से 17 रन बनाए। और तीन छक्कों की मदद से 46 रन बनाए। उन्हें लंगी निगड़ी ने शम्पी के हाथों बचे हैं। दो बार उन्हें केशव महाराज कैच आऊट कराया।

दिनेश कार्तिक ने लगाया अर्धशतक

लंबे समय बाद टीम इंडिया में वापसी

## ICC मीडिया अधिकार : वैश्विक संस्था ने 711 मैच के लिए 3 पैकेज निकाले

दुर्बार। अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद आईसीसी अपने 8 साल के चक्र (2024 से शुरू होकर) के लिए अपने वैश्विक टूर्नामेंट के लिए 711 मैच के लिए मीडिया अधिकार निविदा बेचने की प्रक्रिया 20 जून से शुरू करेगा। पैकेज में महिलाओं का अंडर-19 2020 विश्व कप भी शामिल है। बीसीसीआई भारतीय क्रिकेट बोर्ड के विपरीत आईसीसी पारंपरिक सीलबंद प्रक्रिया अपनाएं जिसमें पुरुष और महिला मैचों के लिए अलग-अलग बोली लगाई जाएंगी। भारतीय बोर्ड ने तीन दिन इंडीलामी के जरिए इंडियन मीडिया अधिकार स्ट्रिकर्ड 48,390 करोड़ रुपए में बेचे।



आईसीसी ने पुरुषों और महिलाओं के लिए तीन विशेष पैकेज निकाले हैं, जिसमें दोनों के लिए अधिकार हासिल किए जा सकते हैं। महिलाओं के लिए केवल चार

रखा गया है। पुरुषों के वर्ग में 4 और 8 साल के लिए अधिकार हासिल किए जा सकते हैं। महिलाओं के लिए केवल चार

## फीडे कैंडीडेट्स शतरंज - नेपोमिन्सी और कास्त्राना की जीत से शुरुआत

मेडिड स्पेन। फीडे कैंडीडेट शतरंज के पहले ही राउंड में रोमांचक मुकाबले खेलने को मिले और चार में से दो मुकाबलों में परिणाम निकाले जबकि दो बाजियाँ अनिर्णीत रही। पहले दिन रूस के यान नेपोमिन्सी और यूएसए के फवियानों का रूसाना जीत दर्ज कर शुरुआती बढ़त हासिल करने में कामयाब रहे।

सबसे पहली जीत दर्ज की नेपोमिन्सी ने, उन्होंने काले मोहरों से खेलते हुए टॉप सीड़ी के डिंग लीन को रूसाने अपनिंग में 32 चालों में पराजित किया इसके बाद बारी थी कास्त्राना की जिन्होंने हमवतन द्विकाल नाकामुरा को सफेद मोहरों से खेलते हुए गय लोरेज एक्सेंज वेरिएशन में 50 चालों में पराजित किया। अन्य दो



अजरबैजान के तैमूर रद्जाबीव ने इस टूर्नामेंट का विजेता विश्व कास्ट्राना के अलीजी फिरौजा से विजेता मानस कार्लसिन को विश्व खिताब की चुनौती देता।

## Rafael Nadal को विम्बलडन में खेलने की उम्मीद, पैर में दर्द से हैं पीड़ित

मैडिड। राफेल नडाल अपने बाएं पैर के दर्द के नए इलाज की बदौलत एक हप्ते तक 'लंगाझे बिना' चल रहे हैं जिससे 22 बार का यह ग्रैंडस्लैम चैम्पियन विम्बलडन में खेलने की कोशिश करारा। नडाल ने कहा कि मेरी इच्छा विम्बलडन में खेलने की ही उन्होंने कहा कि अगर आजें उस तरह से नहीं होती हैं जैसा कि मैं चाहता हूं तो हम देखेंगे कि व्याहों का द्वारा भारी बार भारत में और 30 साल बाद एशिया में किया जा रहा है। पीएमओं के मुमार्ह 189 देशों की भागीदारी के साथ यह किसी भी शतरंज ओलंपियाड में अब तक की सबसे बड़ी भागीदारी होगी।

## गुरुरेगी। फिडे के अव्यक्ष अर्कडी इवोरोकोविच इस मशाल को

उद्देश्य से शतरंज ओलंपियाड के लिए मशाल रिले की यह परंपरा

गुरुरेगी। फिडे के अव्यक्ष अर्कडी इवोरोकोविच इस मशाल को अब तक एक विश्व अमेरिकी उपस्थित लोगों को सबोधित भी करते हैं। इस वर्ष पहली बार अंतर्राष्ट्रीय शतरंज महासंघ अंडर-16 विश्व ओलंपियाड की मशाल रिले की शुरुआत की है जो कि ओलंपिक परंपरा का हिस्सा है और जिसे शतरंज ओलंपियाड में अब तक कभी शामिल नहीं किया गया था।

पीएमओं ने कहा कि शतरंज के साथ भारत के रिते को और नई उंचाइयों पर ले जाने के

अब हमेशा भारत से शुरू होगी प्रधानमंत्री को सौंपेंगे, जिसे प्रधानमंत्री आगे गैंडमास्टर विश्वानाथ आनंद को सौंपेंगे। इस

मशाल को आयोजन स्थल महाबलीपुरम पहुंचने से पहले 40 दिनों की अवधि के दौरान देश के 75 शहरों में ले जाया जाएगा। हर स्थान पर उस प्रदेश के शतरंज के ग्रैंडमास्टर इस मशाल को प्राप्त करेंगे।

44वां शतरंज ओलंपियाड 28 जुलाई से लेकर 10 अगस्त 2022 के दौरान महाबलीपुरम में आयोजित किया जाएगा। 1927 से आयोजित की जा रही इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता का आयोजन वहली बार भारत में और 30 साल बाद एशिया में किया जा रहा है। पीएमओं के मुमार्ह 189 देशों की भागीदारी के साथ यह किसी भी शतरंज ओलंपियाड में अब तक की सबसे बड़ी भागीदारी होगी।

मेजबान टीम अभी भी पहली पारी में 112 रन से पिछड़ रहे हैं। दिन का खेल समाप्त होने पर महमूदुल हसन जाय 18 और नजमुल होसना 8 रन बनाकर नाबाकर है।

दो टेस्ट मुकाबलों की सीरीज के पहले मैच के लिए वेस्टइंडीज ने 94/2 से दिन की शुरुआत की और 134 के स्कोर पर नक्काश बोन (33) का विकेट गवाया। चौथे विकेट के लिए एंग्रेज ब्रैथवेट (94) और जर्मेन ब्लैकवुड (63) का विकेट गवाया। चौथे विकेट दुम्यांगशीली रहे और अपने शतरंज तक दो छठे रन पहले ही आउट हो गए।

मेजबान टीम अभी भी उन्होंने दो छठे रन पहले ही आउट हो गए।

मेहदी हसन ने चटकाए चार विकेट

विकेट के मध्यस्थ तक दो छठे रन पहले ही आउट हो गए।

मेहदी हसन ने चटकाए चार विकेट

विकेट के मध्यस्थ तक दो छठे रन पहले ही आउट हो गए।

मेहदी हसन ने निपटाने का काम किया।

